साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 3 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 4 सितंबर 2024 से 10 सितंबर 2024 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

वायु प्रदूषण से इंदौर में हर साल 2400 की मौत

इंदौर क्लीन एयर कैटलिस्ट (सीएसी) ने शुक्रवार को ट्रैफिक पुलिसकर्मियों के लिए स्वास्थ्य और वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव विषय पर आयोजित वर्कशॉप में एक दिन का प्रशिक्षण दिया। क्लीन एयर कैटलिस्ट के एक अध्ययन के मुताबिक इंदौर में 70 फीसदी वायु प्रदूषण वाहनों के कारण होता है। वरिष्ठ पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. सलिल भार्गव ने कहा, वायु प्रदूषकों के संपर्क में रहने से सांस और हृदय संबंधी बीमारियों सहित कई स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। वायु प्रदूषण से संबंधित बीमारियां हमारी 100 साल की जिंदगी को घटा कर 70-80 साल तक ला रही हैं। वायु प्रदूषण से यातायात पुलिस के लिए जोखिम ज्यादा है। प्रशिक्षण में आशा कार्यकर्ताओं को वायु प्रदूषण के कारणों, स्रोतों, जोखिमों और बचने के उपायों को लेकर प्रशिक्षित किया। इस ट्रेनिंग के लिए आशा कार्यकर्ताओं का चयन इंदौर के उन दस वार्डों से किया गया, जिन्हें लो एमिशन जोन्स में वायु गुणवत्ता सुधार के लिए चुना है। स्टडी में हुआ खुलासा- ग्लोबल बर्डन ऑफ डिसीज़ स्टडी के मुताबिक वायु प्रदूषण से वर्ष 2019 में भारत में 16 लाख व मप्र में करीब 1.12 लाख लोगों की मौत हुई। इंदौर में वायु प्रदूषण के कारण हर साल करीब 2,400 मौतें होती हैं और बच्चों में अस्थमा के करीब 620 नए मामले सामने आते हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण रैंकिंग में भारत पहले नंबर पर, सरकारी आंकड़ों पर भी उठे सवाल

मुंबई। भारत दुनिया का सबसे बड़ा प्लास्टिक प्रदूषक बन गया है। यहां सालाना 9.3 मिलियन टन प्लास्टिक निकलता है। जो वैश्विक प्लास्टिक उत्सर्जन का लगभग पांचवां हिस्सा है। नेचर जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि भारत की आधिकारिक कचरा उत्पादन दर लगभग 0.12 किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रति दिन है, लेकिन इसे संभवत: कम आंका गया है। इसकेअलावा कचरे के संग्रहण का आंकड़ा भी गलत है। अध्ययन के मुताबिक ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि आधिकारिक आंकड़ों में ग्रामीण क्षेत्र, बिना एकत्र किए गए कचरे को खुले में जलाना या अनौपचारिक क्षेत्र द्वारा रिसाइकिल (पुनर्चक्रित) कचरा शामिल नहीं हैं। भारत के बाद नाइजरिया दूसरे नंबर पर है, जहां 3.5 मीट्रिक टन प्लास्टिक प्रदूषण होता है, जबकि .4 मीट्रिक टन उत्सर्जन के साथ इंडोनेशिया तीसरे स्थान पर है। इस रिसर्च पेपर के लेखकों में से एक और लीड्स विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ सिविल इंजीनियरिंग के रिसोर्स एफिशिएंसी सिस्टम्स के एकेडमिक कोस्टास वेलिस कहते हैं कि भारत अब सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है। प्लास्टिक प्रदूषण से आशय है, प्लास्टिक को खुले में अनियंत्रित तरीके से जलाना। लेकिन इस पर ध्यान नहीं दिया गया या इसे कम करके आंका गया। और यही वजह है कि भारत एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है। अध्ययन में प्लास्टिक उत्सर्जन को ऐसी सामग्री के रूप में परिभाषित किया गया है, जो प्रबंधित या कुप्रबंधित प्रणाली (नियंत्रित या नियंत्रित अवस्था) से अप्रबंधित प्रणाली (अनियंत्रित या अनियंत्रित अवस्था - पर्यावरण) में चली गई है। पिछले अध्ययनों में चीन को वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने वाला देश बताया गया था। शोधकर्ताओं ने लिखा है कि नए अध्ययन में, जिसमें हाल के डेटा का उपयोग किया गया है, चीन को चौथे स्थान पर रखा गया है, जिससे पता चलता है कि चीन में कचरे का निस्तारण व नियंत्रित लैंडफिल बढ़ा है। वेलिस ने कहा चीन, जिसकी आबादी [भारत के समान] है, ने पिछले 15 वर्षों में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट के लिए संग्रह और प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे और सेवाओं में बड़े पैमाने पर निवेश किया है। विशेषज्ञ ने यह भी उल्लेख किया कि पिछले अध्ययनों में चीन जैसे प्रमुख प्रदूषकों के लिए पुराने डेटा का उपयोग किया गया था, जो यह बता सकता है कि उनके उत्सर्जन को अधिक क्यों आंका गया था। उन्होंने कहा कि नया अध्ययन उत्पन्न अप्रतिबंधित कचरे के लिए सुधार एल्गोरिदम का उपयोग करता है।

हीलियम के लीक होने के कारण जोखिम और बढ़ गया

टोरंटो। अंतरिक्ष यात्रियों सुनीता विलियम्स और बैरी विलमोर के फरवरी 2025 तक अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में फंसे रहने की खबर उन चुनौतियों को सामने लाती है जो मानवयुक्त अंतरिक्ष अभियानों में सामने आ सकती हैं। अंतरिक्ष यात्रियों का यह अनुभवी जोड़ा जून के आरंभ में बोइंग स्टारलाइनर पर सवार होकर आईएसएस पहुंचा था। यह मिशन आठ दिन का था। स्टारलाइन पहले ही दो लॉन्च कर चुका था लेकिन यह उसका पहला मानवयुक्त मिशन था। इसके थस्टर्स में समस्या के कारण आईएसएस के साथ इसके जुड़ाव में दिक्कत आई और

हीलियम के लीक होने के कारण जोखिम और बढ़ गया। स्टारलाइनर को यात्रियों के बिना धरती पर लाना संभव है लेकिन इसे इंसानों को लाने की दृष्टि से असुरक्षित माना जा रहा है। नासा नहीं चाहता कि दो स्पेस शटल दुर्घटनाओं का इतिहास फिर से दोहराया जाए। अतीत में हुई ऐसी ही दुर्घटनाओं में कल्पना चावला सहित कई अंतरिक्ष यात्री जान गंवा चुके हैं। ऐसे में इस बार यात्रियों को अभी आईएसएस में ही रहना होगा और वे फरवरी 2025 में स्पेसएक्स के विमान से लौट सकेंगे। नासा ने जब आईएसएस पर वस्तुओं और मनुष्यों को ले जाने में सक्षम जीवन रक्षक कैप्सूल के साथ चल सकने वाले यानों के लिए निविदा जारी की तो उसने दूरदर्शिता का परिचय दिया। उसने दो डिजाइनों के लिए अनुबंध चुने। एक बोइंग से तो दूसरा स्पेसएक्स से। स्पेसएक्स ने जहां बार-बार इस्तेमाल किए जाने वाला डिजाइन तैयार किया वही बोइंग इसके लिए संघर्ष करती रही। दशकों के तकनीक और वैमानिकी में गहरे अनुभव के बावजूद बोइंग की परियोजना की लागत स्पेसएक्स के करीब तीन गुना रही और इसमें अनुमान से बहुत अधिक समय और पैसा खर्च हुए। स्टारलाइन में अभी भी खामियां हैं। उसका थर्स्टर अभी भी कमजोर प्रदर्शन कर रहा है। यह आईएसएस के साथ जुड़ पाने में भी मुश्किलों से जूझता रहा है। अब वापसी की यात्रा के लिए स्पेस स्टेशन से अलग होने के लिए उसे सॉफ्टवेयर अपग्रेड की आवश्यकता है। बहरहाल, इसमें अतिरिक्त क्षमता मौजूद है और पृथ्वी पर वापस आने के लिए पर्याप्त गतिशीलता मौजूद है। हालांकि, गैस लीक के मामले गंभीर होते हैं क्योंकि ये अपने आप में जानलेवा साबित हो सकते हैं। अगर स्पेसएक्स का विकल्प नहीं होता तो आईएसएस पर सभी लोग फंसे रह जाते। एक भयंकर विस्फोट या अनियंत्रित ढंग से क्रैश हो जाने के बजाय उनके सामने खाने और ऑक्सीजन की कमी की स्थिति पैदा हो जाएगी। मानवयुक्त अभियानों में ऐसे जोखिम होते हैं और नासा के मानवयुक्त मिशन तथा ऐसे सोवियत कार्यक्रम दोनों को त्रासदियों का सामना करना पड़ा। यह अंतरिक्ष में लोगों को स्वस्थ रखने की चुनौतियों से एकदम अलग है। स्पेस फ्लाइट को तय अवधि तक गति की आवश्यकता होती है। इसके चलते शरीर पर गुरुत्वाकर्षण का भार सामान्य से 9-10 गुना तक अधिक रहता है। शून्य गुरुत्व वाली लंबी अवधि भी होती है जिसके कारण मांसपेशियों में समस्या पैदा हो सकती है या स्वास्थ्य संबंधी अन्य दिक्कतें हो सकती हैं।

प्रकाश कब बनता है प्रदूषण?

जब प्रकाश तयशुदा स्थान से अन्यत्र चला जाता है तब उसे ट्रेसपास या स्पिलओवर कहते हैं। उदाहरण के लिए जब अवांछित प्रकाश किसी घर या इमारत में प्रवेश करता है, तब ट्रेसपास होता है। हम अक्सर देखते हैं कि सड़कों पर होने वाली रोशनी दरवाजों या खिड़कियों के जरिए लोगों के घरों में प्रवेश कर जाती है और नींद में खलल या अनिद्रा का कारण बनती है।

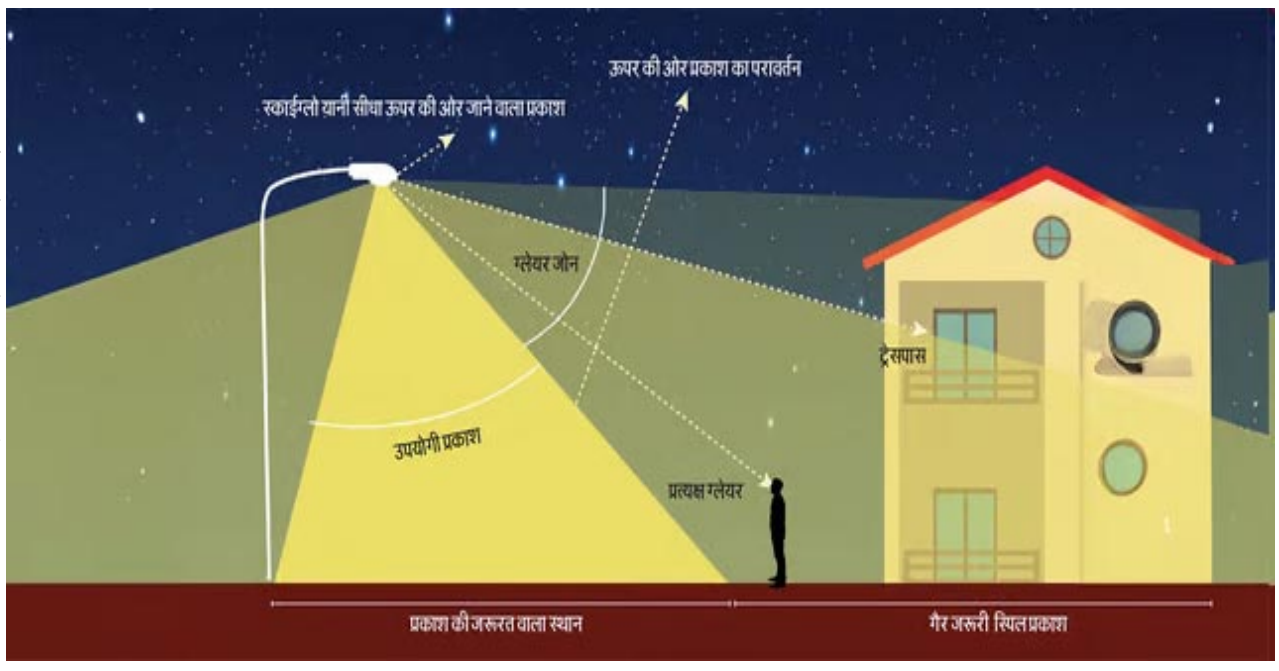

स्काईग्लो का मतलब है- आसमान की चमक में वृद्धि। यह वृद्धि शहरी क्षेत्रों के आसमान में छाए रोशनी के गुबार के रूप में दिखती है। स्काईग्लो से प्रभावित इलाकों का आसमान काले के बजाय सफेद-मटमैला या नारंगी रंग का दिखाई देता है। अत्यधिक चमक होने पर यह हल्का पीला भी दिखाई दे सकता है। इस चमक के कारण तारों और ग्रहों को पहचानने में मुश्किलें आती हैं। हो सकता कि ये बिलकुल भी दिखाई न दें। अंतरराष्ट्रीय गैर लाभकारी संगठन डार्क स्काई के अनुसार, दुनिभया का 23 प्रतिशत भूमिक्षेत्र स्काईग्लो से प्रभावित है। इसके कारण 50 प्रतिशत से अधिक अमेरिका और 88 प्रतिशत यूरोप में आकाशगंगा दिखाई देनी बंद हो गई है। स्काईग्लो मुख्य रूप से खिड़की से बाहर निकलने वाली रोशनी, सफेद एलईडी स्ट्रीट लाइट, लटकन रोशनी, खुली स्टेडियम लाइट, एलईडी बिलबोर्ड व साइनबोर्ड, पार्किंग की रोशनी और सुरक्षा रोशनी के कारण होता है। यह किसी क्षेत्र का संयुक्त प्रकाश होता है जो आसमान की ओर जाता है। ग्लेयर -यह अत्यधिक चमक या चकाचौंध है। जब तेज रोशनी आंखों पर पड़ती है और उसके प्रभाव से दिखाई देखने की क्षमता पर असर पड़ता है, तब ग्लेयर की स्थिति बनती है। आमतौर पर वाहनों के हेडलाइट्स या स्ट्रीटलाइट्स सीधे आंखों पर पड़ने पर ऐसा होता है। मौजूदा समय में ऐसे हालात अक्सर सड़क पर चलते समय बनते रहते हैं और कई बार तो यह अनियंत्रित प्रकाश हादसों का कारण भी बनता है। प्रकाश प्रदूषण की उपरोक्त तीन प्रमुख श्रेणियों के अलावा लाइट क्लटर और ओवर इल्यूमिनेशन को भी इसमें जोड़ा गया है। लाइट क्लटर तब होता है जब चमकीली रोशनी के कई भ्रमित करने वाले समूह मौजूद होते हैं। ओवर इल्यूमिनेशन से तात्पर्य जरूरत से अधिक रोशनी के इस्तेमाल से है। जैसे बहुत सी खाली इमारतों या ऐतिहासिक स्थलों पर जरूरत न होने पर ध्यान आकर्षित करने के लिए रोशनी की व्यवस्था रहती है।

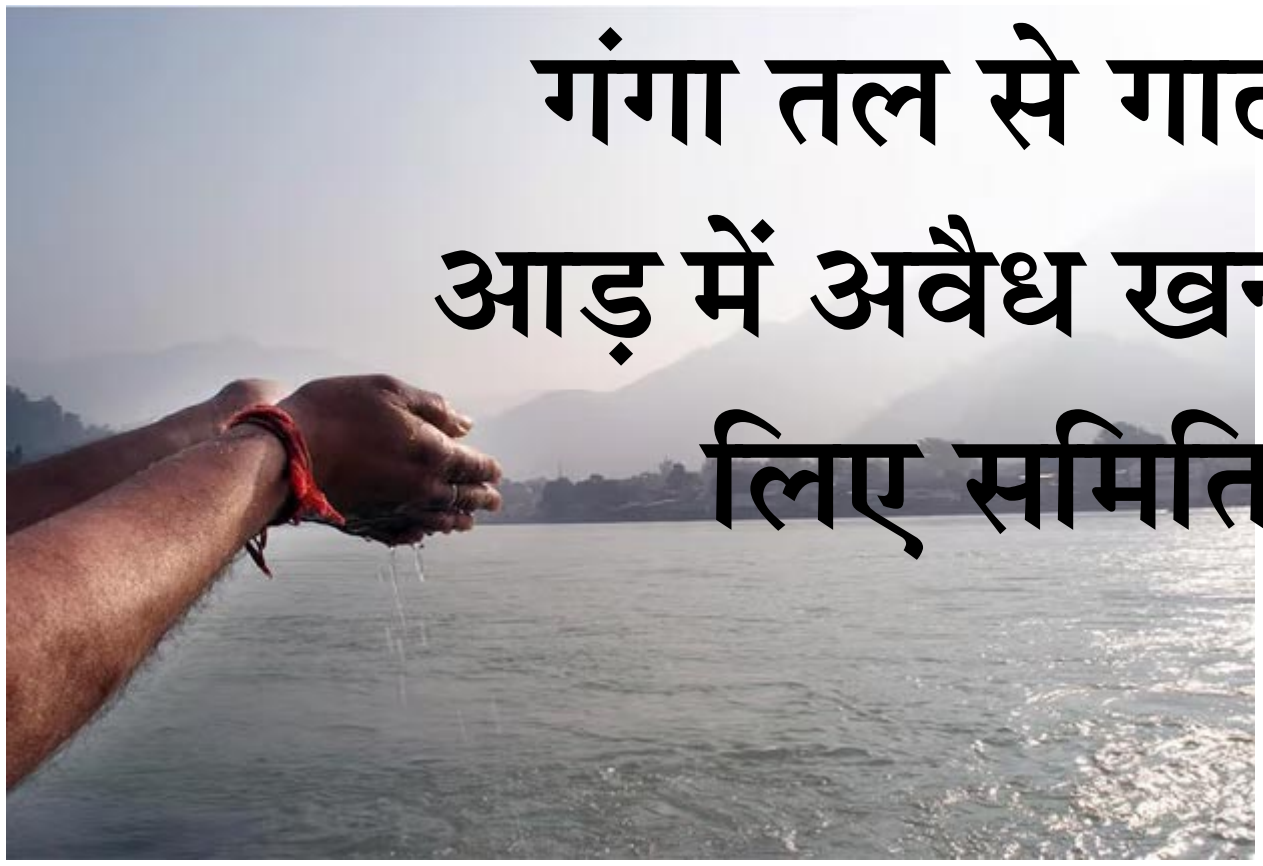

गंगा तल से गाद हटाने की आड़ में अवैध खनन, जांच के लिए समिति गठित

मुंबई। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने देहरादून में गंगा से गाद हटाने के नाम पर चल रहे खनन के गोरखधंदे की जांचे के आदेश दिए हैं। इसके लिए संयुक्त समिति के गठन का भी निर्देश दिया है। मामला ऋषिकेश में त्रिवेणीघाट, नावघाट, दत्तात्रेय घाट, सूर्यघाट और मायाकुंड में गाद हटाने के नाम पर चल रहे अवैध खनन के दावों से जुड़ा है।

ट्रिब्यूनल द्वारा चार सितम्बर को दिए आदेश के मुताबिक इस समिति में देहरादून के जिला मजिस्ट्रेट, उत्तराखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के प्रतिनिधि शामिल होंगे। इस समिति से साइट का दौरा करने, जानकारी इकट्ठा करने और एक महीने के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है। मामले में अगली सुनवाई 16 अक्टूबर, 2024 को होगी। शिकायतकर्ता का कहना है कि अधिकारियों ने त्रिवेणी घाट पर बाढ़ के कारण जमा मलबे और गाद को हटाने के लिए आकाश जैन को काम पर रखा था। लेकिन गाद हटाने की आड़ में यह ठेकेदार ऋषिकेश में त्रिवेणीघाट, नावघाट, दत्तात्रेय घाट, सूर्यघाट और मायाकुंड में गंगा के तल से अवैध रूप से रेत और बजरी का खनन कर रहा है।

आरोप है कि वहां खनन के लिए जेसीबी जैसी भारी मशीनों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे नदी की पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही इसकी वजह से पर्यावरण को भारी पैमाने पर नुकसान पहुंच रहा है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने कलियासोत नदी के पास अवैध खनन और निर्माण की वास्तविकता का पता लगाने के लिए दो सदस्यीय समिति को निर्देश दिया है। एनजीटी द्वारा पांच सितंबर 2024 को दिए इस आदेश के मुताबिक समिति मौके का दौरा करेगी और इस मामले में क्या कार्रवाई की गई है, उसकी रिपोर्ट कोर्ट के सामने पेश करेगी। ट्रिब्यूनल ने मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल के जिला कलेक्टर और मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सदस्य सचिव को नोटिस जारी कर छह सप्ताह के भीतर अपना जवाब देने को कहा है। आवेदन में कलियासोत नदी के 33 मीटर के भीतर चल रहे अवैध खनन के साथ-साथ वाल्मीपुर से कॉलोनी तक हो रहे अनाधिकृत निर्माण का मुद्दा उठाया है। इसके साथ ही 33 मीटर के भीतर गेट बनाने, नदी से पत्थर, मिट्टी और बजरी खनन करने की भी बात सामने आई है। इसके साथ ही वहां पर्यावरण संबंधी नियमों का उल्लंघन कर नदी में छोड़े जा रहे सीवेज को लेकर भी चिंता चिंता जताई गई है। आरोप है कि इसकी वजह से नदी का पानी दूषित हो रहा है। वायु प्रदूषण की निरंतर निगरानी के लिए, महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (एसपीसीबी) ने नवी मुंबई के महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम क्षेत्र में पांच वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशन स्थापित किए हैं। एसपीसीबी कोयले और फर्नेस ऑयल के बजाय पीएनजी जैसे स्वच्छ ईंधन का उपयोग करने के लिए सहमति की शर्तों में संशोधन कर रहा है। इसके अतिरिक्त, अधिकांश विलायक-आधारित उद्योगों ने हानिकारक गैसों और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (वीओसी) को मापने और उनका पता लगाने के लिए प्रणाली स्थापित की है। यह जानकारी महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने चार सितंबर, 2024 को दायर अपनी रिपोर्ट में दी हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि नवी मुंबई के ठाणे बेलापुर, ट्रांस ठाणे क्रीक और एमआईडीसी इलाकों में 167 रासायनिक इकाइयां हैं। इनमें 14 बड़े पैमाने के, पांच मध्यम पैमाने के और 148 छोटे पैमाने के रासायनिक उद्योग शामिल हैं। गौरतलब है कि 28 नवंबर, 2023 को पुणे में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की एक टीम ने सर्वेक्षण के लिए ठाणे बेलापुर औद्योगिक एस्टेट और कोपारी गांव, कोपरखिराने और वाशी जैसे आसपास के आवासीय क्षेत्रों का दौरा किया था। सीपीसीबी ने नवी मुंबई में दुर्गंध और वायु प्रदूषण से निपटने के लिए विशेष योजनाएं बनाई हैं। साथ ही इन मुद्दों को नियंत्रित करने के लिए क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए अल्प और दीर्घकालिक उपाय करने की योजना है। रिपोर्ट में दुर्गंध की समस्या पैदा करने वाले क्षेत्रों की पहचान की गई है, जिनमें रासायनिक उद्योग, विलायक का उपयोग करने वाली थोक दवा और रासायनिक इकाइयां, और सामान्य अपशिष्ट उपचार संयंत्र शामिल हैं।

तकनीकी अनुसंधान में भारत बन रहा महाशक्ति, विश्व की 64 में से 45 महत्त्वपूर्ण टेक्नोलॉजी में टॉप पांच देशों में शामिल

प्रौद्योगिकी अनुसंधान क्षेत्र में भारत एक बड़ी वैश्विक महाशक्ति बन कर उभरा है। वर्ष 2023 में जारी रैंकिंग में 64 महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में से 45 में यह शीर्ष 5 देशों में शामिल है। एक साल पहले यह 37 पर था। ऑस्ट्रेलियाई स्ट्रैटेजिक पॉलिसी इंस्टीट्यूट की महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकी ट्रैकर रिपोर्ट के अनुसार 7 प्रौद्योगिकियों में भारत को दूसरा स्थान मिला है।

पिछले वर्ष भारत बायो- विनिर्माण और डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर टेक्नोलॉजी (डीएलटी) जैसे प्रौद्योगिकी शोध के दो उभरते क्षेत्रों में अमेरिका को पछाड़ते हुए भारत ने दूसरा स्थान हासिल किया था। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) के बहुत तेजी से उभरते क्षेत्र में एडवांस डेटा एनालिटिक्स, एआई एल्गोरिदम, हार्डवेयर एक्सलरेटर, मशीन लर्निंग, एडवांस इंटीग्रेटेड सर्किट डिजाइन ऐंड फैब्रिकेशन, नैचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और एडवर्सेरियल एआई जैसे महत्त्वपूर्ण सेगमेंट में भारत केवल अमेरिका और चीन से ही पीछे है। रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र में 2003 से 2007 के बाद यह बड़ी छलांग है जब भारत केवल चार प्रौद्योगिकियों के साथ शीर्ष पांच देशों में शुमार था। यह ट्रैकर अंतरिक्ष, रक्षा, ऊर्जा, पर्यावरण, एआई, रोबोटिक्स, बॉयोटेक्नोलॉजी, साइबर सुरक्षा, एडवांस कंप्यूटिंग, एडवांस मैटेरियल और क्वांटम तकनीक समेत कई महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकी क्षेत्रों को अपने शोध में शामिल करता है। इसने वर्ष 2003 से 23 तक के आंकड़े जुटाए हैं तथा सबसे अधिक उद्धृत पत्रों के शीर्ष 10 प्रतिशत के रूप में परिभाषित उच्च प्रभाव वाले अनुसंधान पर नजर रखी। इस प्रकार यह किसी देश के अनुसंधान प्रदर्शन, रणनीतिक लक्ष्यों और भविष्य की प्रौद्योगिकी क्षमता के संकेतक के रूप में होता है। वैश्विक अनुसंधान चार्ट में चीन सबसे ऊपर है और महत्त्वपूर्ण 64 प्रौद्योगिकियों में 57 पर उसका दबदबा है। इसके उलट अमेरिका का नंबर आता है। वर्ष 2019 से 2023 के बीच की रैंकिंग के आधार पर इस समय 7 क्षेत्रों में ही वह शीर्ष पर है, जिसमें क्वांटम कंप्यूटिंग और वैक्सीन और मेडिकल काउंटरमेशर्स शामिल हैं जबकि वर्ष 2003 से 2007 के बीच 60 प्रौद्योगिकियों में उसका प्रभुत्व था। शोध के मामले में ब्रिटेन की स्थिति में भी गिरावट दर्ज की गई है और 37 प्रौद्योगिकियों में से केवल 5 में ही उसका पांचवां स्थान है। पिछले साल यह संख्या 44 थी।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई के आदर्शों और सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने के लिये होंगे लगातार कार्यक्रम

इसके लिये राज्य शासन द्वारा गठित की जायेगी समिति - मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

डॉ. यादव लोकमाता देवी अहिल्याबाई उत्सव में हुए शामिल

इंदौर (नगर प्रतिनिधि) मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि लोकमाता देवी अहिल्याबाई के आदर्शों, सिद्धांतों, व्यक्तित्व और कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिये राज्य शासन द्वारा समिति का गठन किया जायेगा। इस समिति के माध्यम से लगातार कार्यक्रम होंगे। समिति गठन के संबंध में शीघ्र ही आदेश जारी किये जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लोकमाता देवी अहिल्याबाई हम सबकी आदर्श और प्रेरणा स्त्रोत है। देवी अहिल्याबाई ने जनहितैषी और ममतामयी विशेष शासन व्यवस्था से देश में विशेष पहचान स्थापित की है। वे सनातन धर्म की बड़ी संवाहक रही हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज यहां इंदौर में पुण्य सलिला देवी अहिल्याबाई होलकर की 229 वीं पुण्यतिथि पर आयोजित गुणीजन सम्मान, पुरस्कार वितरण एवं पुण्य स्मरण समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस अवसर पर अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्रों में काम करने वाले श्रीयुत श्रीकांत वासुदेव को गुणीजन सम्मान प्रदान किया। अहिल्या उत्सव के दौरान एक माह तक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये। डॉ. यादव ने अहिल्या उत्सव पर आयोजित माँ अहिल्याबाई होलकर की पालकी यात्रा का पूजन किया और उन्होंने बड़ी श्रद्धा के साथ पालकी को अपने कांधों पर थामकर यात्रा की शुरूआत की। उन्होंने माँ अहिल्याबाई होलकर के चित्र पर श्रद्धासुमन भी अर्पित किये। इस अवसर पर पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, सांसद श्री शंकर लालवानी, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, शिव गंगा अभियान के प्रमुख श्री महेश शर्मा,श्री यशवंतराव होलकर (तृतीय) विशेष रूप से मौजूद थे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि इतिहास में इंदौर का विशेष स्थान रहा है। यहां देवी अहिल्याबाई होलकर जैसी न्यायप्रिय, कुशल संगठक, कुशल प्रबंधक, संघर्षशील, धर्मप्रिय एवं उद्दतभाव वाली ममतामयी शासक रही हैं। इन्होंने अपनी शासन व्यवस्था से देश में विशेष पहचान कायम की है। उन्होंने भगवान शिव को आराध्य मानकर साथ में रखा और शासन व्यवस्था चलायी। उनके द्वारा महिला सशक्तिकरण और जल संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में किये गये कार्य आज भी हमारे लिए प्रेरणा के स्त्रोत है। उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र में सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यों को बढ़ावा दिया है। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व, आदर्श और सिद्धांत हमारे लिये प्रेरणास्पद है। उनके इन आदर्शों, सिद्धांतों, व्यक्तित्व और कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिये राज्य शासन द्वारा समिति का गठन किया जा रहा है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने कहा कि पुण्य सलिला देवी अहिल्याबाई होलकर ने जल संरक्षण के क्षेत्र में हमें नई दिशा दिखायी है। उनके इन कार्यों से प्रेरणा लेकर हमने इंदौर जिले में अभियान चलाकर जनभागीदारी से 200 से अधिक तालाबों का गहरीकरण कराया है। उन्होंने कहा कि देवी अहिल्याबाई का उत्सव समाज का उत्सव है। इस उत्सव में समाज के हर वर्ग, हर जाति, हर धर्म, हर आयु वर्ग के लोग पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ शामिल होते हैं। माँ अहिल्याबाई के पुण्य प्रताप का लाभ इंदौर को हमेशा मिलता रहा है। उन्होंने कहा कि उनके बताये मार्गों और सिद्धांतों पर चलकर हम सब इंदौर को नई ऊंचाईयों पर ले जाएंगे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अहिल्या उत्सव समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक डागा ने स्वागत उद्बोधन दिया।

जानलेवा हुई हवा, दिल्ली में भी बढ़ा प्रदूषण

नोएडा देश के सभी शहरों को पीछे छोड़ जलना की हवा में घुला जहर जानलेवा स्तर पर पहुंच गया है। हालात यह है कि वहां वायु गुणवत्ता सूचकांक बढ़कर 310 पर पहुंच गया है। इसी तरह देश के दस सबसे प्रदूषित शहरों में श्रीगंगानगर, बर्नीहाट, ग्रेटर नोएडा, अंगुल, विशाखापत्तनम, रायचुर, समस्तीपुर, इंफाल, चंडीगढ़ शामिल रहे। इन सभी शहरों में वायु गुणवत्ता विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी मानकों से कई गुणा ज्यादा है। वहीं दूसरी तरफ देश में दावनगेरे की हवा सबसे साफ रही, जहां एक्यूआई 24 दर्ज किया गया है। यदि देश के सबसे प्रदूषित शहर जलना की तुलना दावनगेरे से करें तो वहां हवा 12 गुणा ज्यादा खराब है। दावनगेरे की तरह ही देश के 115 अन्य शहरों में भी वायु गुणवत्ता का स्तर बेहतर बना हुआ है। इन शहरों में गोरखपुर, हल्दिया, हसन, हिसार, हुबली, हैदराबाद, जलगांव, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, कलबुर्गी, कल्याण, करौली, कारवार, कटनी, किशनगंज, कोहिमा, कोलार, कोल्हापुर, कोलकाता, कोप्पल, कोरबा, कुरूक्षेत्र, लखनऊ आदि शहर शामिल रहे। हालांकि कल की तुलना में देखें तो देश में बेहतर वायु गुणवत्ता वाले शहरों की संख्या में ढाई फीसदी की गिरावट आई है। आंकड़ों के मुताबिक राजधानी दिल्ली में भी कल से प्रदूषण के स्तर में इजाफा देखा गया है, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 11 अंक बढ़कर 94 पर पहुंच गया। दूसरी तरफ पड़ोसी शहर फरीदाबाद की वायु गुणवत्ता में कल से चार अंकों की गिरावट आई है। जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक गिरकर 74 पर पहुंच गया है। हालांकि इन दोनों शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर संतोषजनक बना हुआ है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008